भारतीय समाज में सामाजिक समस्याएं

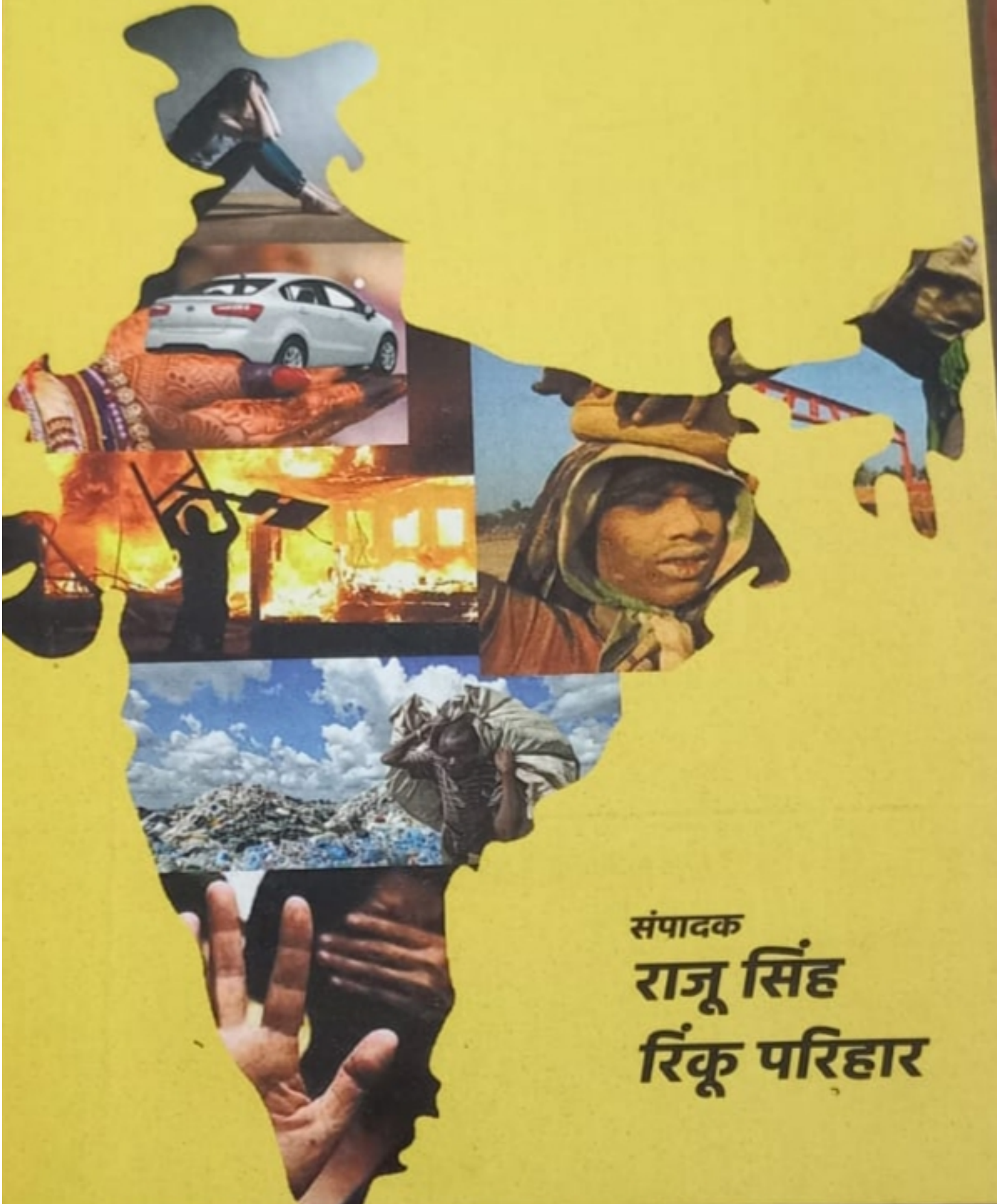

संपादक
राजू सिंह
रिंकू परिहार

प्रथम संस्करण 2022
ISBN- 978-93-93997-13-5
©सर्वाधिकार लेखकगण

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटो किसी भी या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

रचना - भारतीय समाज में सामाजिक समस्याएँ
(Bhartiy Samaj me Smajik Samsyayen)

संपादक - राजू सिंह, रिंकू परिहार
(Raju Singh, Rinku Parihar)
प्रकाशक एवं मुद्रक

BEILLUSTRATED

www.beillustrated.com
503B, Manish Enclave, New RTO,
Udaipur, 313001

अनुक्रम

इकाई - I सामाजिक समस्याओं के अवधारणात्मक पक्ष

1. सामाजिक समस्याएँ : प्रकार एवं कारक - अल्का रानी शर्मा 7-28
2. सामाजिक समस्याएँ- सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य - डॉ. मितेश जुनेजा 7
3. सामाजिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ - डॉ. चन्द्ररेखा शर्मा 13

इकाई - II भारतीय समाज में विकास सम्बन्धी समस्याएँ 19

1. भारत में निर्धनता - *डॉ. प्रकाश चन्द्र, **विक्रम सिंह सोलंकी 29-80
2. भारत में निर्धनता और बेरोजगारी - राकेश सैनी 29
3. भारत में अशिक्षा की समस्या - डॉ. दीपिका राय 37
4. विकास एवं विस्थापन के नए आयाम - डॉ. राजू सिंह 53

इकाई - III भारतीय समाज प्रमुख सामाजिक समस्याएँ 65

1. भारत में जनसंख्या वृद्धि का परिदृश्य - डॉ. कमलेश पालीवाल 81-314
2. धार्मिक नृजातीयता एवं क्षेत्रीय असमानता - गणेश चन्द्र अरोड़ा 81
3. दलित वर्ग समस्या एवं निवारण - डॉ. महावीर कुमार जैन 93
4. मादक द्रव्य व्यसन - डॉ. मनजीत सिंह 103
5. साइसाइबर अपराध - बहादुर सिंह राव 115
6. लैंगिक विषमता और घरेलू हिंसा - रुचिका शर्मा 125
7. श्वेतवसन अपराध - डॉ. संगीता अठवाल 137
8. अपराध - डॉ. उर्मिला मीणा 153
9. आतंकवाद - डॉ. विद्या मेंनारिया 159
10. भारत में दहेज प्रथा - बबीता 171
11. भारत में बढ़ता शहरीकरण - हेमलता गर्मेती 181
12. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार - डॉ. इन्द्र सिंह राठौड़ 191
13. वर्तमान भारतीय परिवेश और वृद्धावस्था - अभिलाषा शर्मा 201
14. जनसंख्या विस्फोट- अर्थ, कारण और परिणाम - कैलाश चंद्र रौत 209
15. अंतर पीढ़ी संघर्ष एवं अंतरा पीढ़ी संघर्ष - लता शक्तावत 217
16. जनजाति समाज की समस्या एवं समाधान - माया सेन 227
17. मजदूर प्रवासन (कोविड-19 महामारी के विशेष सन्दर्भ में) - पूजा चौधरी 235
18. भारत में मानवाधिकार, हनन व समाधान - रिंकू परिहार 241
19. महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा - सुजाता चारण 247
20. जातिवाद - सुनीता चिराणियाँ 259
21. सागड़ी प्रथा / बंधुआ मजदूर - डॉ लता अग्रवाल 271
22. कृषि संकट और किसानों की आत्महत्या - अभिलाषा शर्मा 275
23. सम्मान हत्या - एक अभिशाप - अर्चना 281

24. ऑनर किलिंग - डॉ. सुमित्रा शर्मा.....299
25. भारत में साम्प्रदायिकता - समस्या और समाधान - डॉ. बालूदान बारहठ 309

डॉ. संगीता अग्रवाल

7. श्वेतवसन अपराध

सामान्यतः अपराधशास्त्र में अपराध, बाल-अपराध, संगठित अपराध, पुलिस, कानून, न्याय व्यवस्था आदि का अध्ययन किया जाता है। अपराधों के बारे में सामान्यतया यह धारणा रही है कि अपराध केवल गरीबों एवं अभावग्रस्त लोगों द्वारा ही किया जाता है। इस बात पर कभी किसी का ध्यान नहीं गया कि अपराध समाज के प्रतिष्ठित, सुसभ्य, शिक्षित एवं सम्पन्न लोगों द्वारा भी किया जा सकता है। इनके द्वारा किए गए अपराध को श्वेतवसन अपराध कहा गया। शब्द 'सफेदपोश अपराध' व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारी पेशेवर द्वारा किए गए आर्थिक रूप से प्रेरित, अहिंसक या सीधे अहिंसक अपराध को संदर्भित करता हैं। इसे पहली बार 1939 में समाजशास्त्री एडविन सदरलैण्ड द्वारा अपने व्यवसाय के दौरान किए गए अपराध के रूप में परिभाषित किया गया था। विशिष्ट सफेदपोश अपराधों में मजदूरी की चोरी, धोखाधड़ी, रिश्वतखोरी, पोंजी योजनाएँ, अंदरूनी व्यापार, श्रम प्रवचंना, गबन, साइबर अपराध, जालसाजी शामिल हो सकते है। सफेदपोश अपराध कॉर्पोरेट अपराध के साथ अतिव्याप्त है।

श्वेतवसन अपराध की परिभाषा एवं अर्थ अमेंरिकन अपराधशास्त्री सदरलैण्ड ने अमेंरिका के 200 सबसे बड़े व्यापारिक संस्थानों में से 70 को अपने अध्ययन के लिए चुना। उनका कहना था कि अपराध तो सक्षम लोगों द्वारा किए जाते हैं किन्तु थोपा उनको गरीब लोगों पर जाता है, उन्हें दण्डित किया जाता हैं क्योंकि इनके पास अपने अपराध को छुपाने के लिए पर्याप्त साधन नहीं होते है। इस अध्ययन में अपराधियों को प्रमुखतः दो भागों में बांटा- एक निम्न वर्गीय अपराधी दूसरे सफेदपोश अपराधी जो साधन सम्पन्न होने के कारण पकड़ में नहीं आते एवं दण्ड से बच जाते है।

सदरलैण्ड के अनुसार1 - "श्वेतवसन अपराध प्रतिष्ठित एवं उच्च सामाजिक प्रस्थिति धारण करने वाले व्यक्ति द्वारा उसके व्यवसाय के दौरान किया जाता है।"

बार्न्स तथा टीटर्स2 श्वेतवसन अपराध को संदेहास्पद आचार नीति वाले व्यापारिक सौदे कहा है।

क्लीनार्ड के अनुसार कानून का वह उल्लंघन जो मुख्यतः व्यापारियों, पेशेवर व्यक्तियों एवं राजनीतिज्ञों जैसे समूहों में उनके व्यवसाय के सम्बन्ध में पाया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओ से स्पष्ट है कि श्वेतवसन अपराध वह है जो उच्च शिक्षित, धनी, प्रतिष्ठित एवं साधन सम्पन्न लोगों द्वारा किया जाता हैं तथा अपने प्रभाव एवं सम्पर्क के कारण ऐसे लोग कानून की पकड़ में नहीं आते। इस प्रकार के अपराधियों को श्वेतवसन अपराधी कहा जाता है।